🏕️🏕️🏕️🏕️🏕️भारत के यूनेस्को (UNESCO) विश्व धरोहर स्थलों का मानचित्र है। २०२५ तक की स्थिति के अनुसार, भारत में कुल ४३ विश्व धरोहर स्थल हैं।

स्थलों का वर्गीकरण (Categories)

चित्र के अनुसार कुल ४३ स्थलों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है:

* सांस्कृतिक स्थल (Cultural Sites): ३५
* प्राकृतिक स्थल (Natural Sites): ७
* मिश्रित स्थल (Mixed Site): १ (कंचनजंगा, सिक्किम)

राज्यवार विश्व धरोहर स्थलों की सूची

उत्तर भारत (North India)

* दिल्ली:
  * कुतुब मीनार और उसके स्मारक
  * हुमायूँ का मकबरा
  * लाल किला परिसर
* उत्तर प्रदेश:
  * आगरा का किला
  * ताजमहल
  * फतेहपुर सीकरी
* उत्तराखंड:
  * नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान (Natural)
* हिमाचल प्रदेश:
  * ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क (Natural)
  * कालका–शिमला रेलवे (पर्वतीय रेलवे)
* चंडीगढ़:
  * ली कोर्बुज़िए का वास्तुकला कार्य (The Architectural Work of Le Corbusier)

पश्चिम भारत (West India)

* राजस्थान:
  * जंतर मंतर, जयपुर
  * केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (Natural)
  * जयपुर शहर (Jaipur City)
  * राजस्थान के पहाड़ी किले (Hill Forts): चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, आमेर, गागरोन, जैसलमेर।
* गुजरात:
  * धोलावीरा (हड़प्पाकालीन शहर)

* रानी की वाव (पाटन)
 * अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर
 * चांपानेर–पावागढ़ पुरातत्व उद्यान
* महाराष्ट्र:
 * अजंता की गुफाएं
 * एलोरा की गुफाएं
 * एलीफेंटा की गुफाएं
 * मुंबई के विक्टोरियन गॉथिक और आर्ट डेको एन्सेम्बल
 * छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (CST)
* गोवा:
 * चर्च और कॉन्वेंट (Churches and Convents)

मध्य भारत (Central India)

* मध्य प्रदेश:
 * सांची के बौद्ध स्मारक
 * भीमबेटका के रॉक शेल्टर (Rock Shelters)
 * खजुराहो स्मारक समूह

दक्षिण भारत (South India)

* कर्नाटक:
 * पट्टदकल के स्मारक समूह
 * हम्पी के स्मारक समूह
 * होयसल के पवित्र मंदिर समूह (Sacred Ensembles of the Hoysalas)
* तेलांगना:
 * काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर
* तमिलनाडु:
 * महान चोल मंदिर (तंजावुर, गंगैकोंडाचोलापुरम और दारासुरम)
 * नीलगिरी माउंटेन रेलवे
 * महाबलीपुरम के स्मारकों का समूह
* केरल/पश्चिमी घाट (Western Ghats):
 * यह एक विस्तृत श्रृंखला है जो महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु तक फैली हुई है। (Natural Site)

पूर्व और पूर्वोत्तर भारत (East & North-East India)

* बिहार:

  * महाबोधि मंदिर परिसर, बोधगया

  * नालंदा महाविहार का पुरातात्विक स्थल

* पश्चिम बंगाल:

  * सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान (Natural)

  * शांतिनिकेतन

  * दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे

* ओडिशा:

  * सूर्य मंदिर, कोणार्क

* सिक्किम:

  * खांगचेंदज़ोंगा (कंचनजंगा) राष्ट्रीय उद्यान (एकमात्र मिश्रित स्थल)

* असम:

  * मानस वन्यजीव अभयारण्य (Natural)

  * काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (Natural)

  * मोइदम्स (Moidams) – अहोम राजवंश की टीला–दफन प्रणाली (यह हाल ही में जोड़ी गई नई धरोहर है)।

मुख्य निष्कर्ष

* सबसे अधिक स्थल: महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्यों में धरोहर स्थलों की संख्या अधिक है।

* नवीनतम जोड़: असम के "मोइदम्स" (Moidams) और कर्नाटक के "होयसल मंदिर" हाल ही में जुड़ी महत्वपूर्ण धरोहरें हैं।

* प्राकृतिक धरोहरें: असम, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, हिमाचल, राजस्थान और पश्चिमी घाट में भारत की समृद्ध जैव विविधता को दर्शाती हैं।

यह मानचित्र भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का एक उत्कृष्ट दृश्य विवरण है।

#विश्व #धरोहर #स्थल

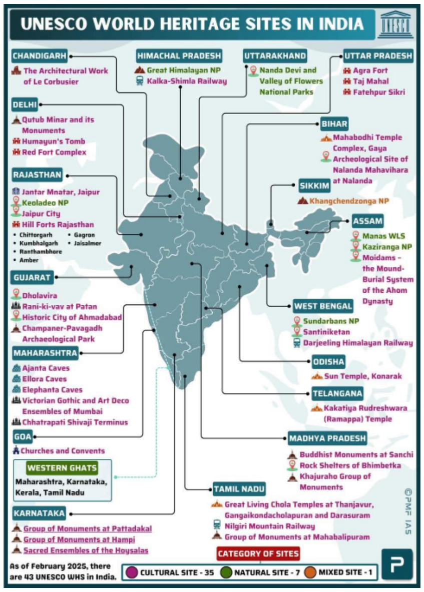

🏕️🔱⚜️☸️ बौध धंम्म का प्रचार–प्रसार

बौद्ध धंम्म के प्रसार की कहानी भारत से शुरू होती है, लेकिन उसका विस्तार सीमाओं के भीतर नहीं रुका। तीसरी बौद्ध संगीति के बाद जब धंम्म प्रचार को संगठित रूप मिला, तब कई प्रमुख भिक्षु अलग–अलग दिशाओं में भेजे गए। श्रीलंका में महिंद्र थेर और संघमित्रा थेरि पहुँचे।

महिंद्र ने वहाँ बौद्ध धंम्म की जड़ें जमाईं, जबकि संघमित्रा भिक्षुणी संघ और पवित्र बोधिवृक्ष की शाखा लेकर पहुँचीं। इन दोनों के कार्य ने श्रीलंका को स्थायी रूप से थेरवाद केंद्र बना दिया। इसी समय, धम्मरक्षित और महाधम्मरक्षित जैसे मिशनरी दक्कन के विभिन्न भागों में फैले—सोपारा और महारठ्ठ में उनकी उपस्थिति के साक्ष्य मिलते हैं।

धम्मरक्षित ने अपरांत क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोगों को धंम्म से जोड़ा, जिससे महाराष्ट्र बौद्ध गतिविधियों का महत्वपूर्ण आधार बना।

उत्तर भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में मज्झन्तिक जैसे भिक्षु कार्यरत थे, जिन्होंने कश्मीर व हिमालय की दिशा में बौद्ध विचार को विस्तार दिया। पश्चिम की ओर महारक्षित को यवन प्रदेश, यानी ग्रीक राज्यों में भेजा गया—यह प्रसार भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर बौद्ध धंम्म की शुरुआती पहुँच का संकेत देता है।

दक्षिण और दक्षिण–पूर्व की ओर सोना और उत्तरा जैसे प्रचारक गए, जिन्हें सुवर्णभूमि के क्षेत्रों—म्यांमार और थाईलैंड की शुरुआती बौद्ध धारा से जोड़ा जाता है। वनवासी और मैसूर क्षेत्र में भी भिक्षुओं की पहुँच दर्ज है, जहाँ बौद्ध शिक्षण की प्रारम्भिक नींव रखी गई।

इसके बाद महायान और वज्रयान काल में प्रसार की दिशा बदलती है। मध्य एशिया के कुचा से निकलकर कुमारजीव चीन पहुँचे और वहां महायान सूत्रों का अनुवाद करके बौद्ध दर्शन को पूर्व एशिया में नई दिशा दी। कुछ शताब्दियों बाद ज़ुआनज़ांग और फाशियन जैसे चीनी यात्री भारत आए, यहाँ की परंपराओं का ज्ञान लेकर लौटे और चीन में उसे सुदृढ़ बनाया। तिब्बत में शान्तारक्षित और पद्मसम्भव पहुँचे—एक ने दार्शनिक आधार रखा, तो दूसरे ने वज्रयान को जीवंत रूप में स्थापित किया। इस प्रकार प्रसार की धारा श्रीलंका से दक्खिन, हिमालय से मध्य एशिया और अंततः चीन–तिब्बत तक फैलती गई। यह संपूर्ण यात्रा बताती है कि बौद्ध धंम्म केवल शिक्षाओं का आदान–प्रदान नहीं, बल्कि क्षेत्रों, संस्कृतियों, भाषाओं और समाजों का मिलन था, जिसने इसे एशिया की सबसे व्यापक आध्यात्मिक परंपराओं में बदल दिया।

🔴 अरावली पर्वतमाला: अगर यह टूटी तो भारत टूटेगा 🌍

(एक पहाड़ नहीं, पूरे देश की ढाल है अरावली)

यह तस्वीर सिर्फ एक पहाड़ नहीं दिखाती —

यह भारत के भविष्य की चेतावनी है।

एक तरफ थार का रेगिस्तान, दूसरी तरफ हरियाली, खेत, जंगल और जीवन।

इन दोनों के बीच जो दीवार बनकर खड़ी है — वही है अरावली पर्वतमाला।

आज वही अरावली खनन माफियाओं, जंगल कटाई और लालच की भेंट चढ़ती जा रही है।

📍 अरावली कहां से कहां तक फैली है?

अरावली भारत की सबसे प्राचीन पर्वतमाला है, जो लगभग ८०० किलोमीटर तक फैली हुई है:

गुजरात – अम्बाजी, पालनपुर

राजस्थान – उदयपुर, राजसमंद, भीलवाड़ा, अजमेर, अलवर

हरियाणा – नूंह (मेवात), फरीदाबाद, गुरुग्राम

दिल्ली – साउथ दिल्ली रिज

👉 यह पर्वतमाला राजस्थान के रेगिस्तान को दिल्ली–NCR तक आने से रोकने वाली अंतिम दीवार है।

🌿 अरावली क्यों इतनी जरूरी है?

अरावली सिर्फ पत्थर नहीं है, यह:

🌧️बारिश का संतुलन बनाती है

💧 भूजल (Ground Water) रिचार्ज करती है

🌬️धूल–रेत के तूफानों को रोकती है

🐆 जंगल और वन्यजीवों का घर है

🌡️ तापमान को नियंत्रित करती है

दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान की सांसें अरावली पर टिकी हैं।

⚠️ आज अरावली संकट में क्यों है?

आज अरावली को खुलेआम काटा जा रहा है:

❌ अवैध खनन (Illegal Mining)

❌ पहाड़ों को मशीनों से तोड़ा जा रहा

❌ जंगलों की अंधाधुंध कटाई

❌ रियल एस्टेट और पत्थर माफिया

❌ कानून होने के बावजूद कमजोर कार्रवाई

यही वजह है कि आज कहा जा रहा है:

“अरावली खड़े–खड़े अपराधी हो गई है।”

🔥 अगर अरावली को तोड़ा गया तो क्या होगा?

यह सिर्फ पर्यावरण नहीं, मानव अस्तित्व का सवाल है।

🌵 १. रेगिस्तान दिल्ली तक पहुंच जाएगा, थार रेगिस्तान हरियाणा और दिल्ली की ओर बढ़ेगा, गर्मी २–४°C तक बढ़ सकती है|

💧 २. पानी खत्म हो जाएगा, गुरुग्राम, फरीदाबाद, दिल्ली में, भूजल स्तर खतरनाक रूप से नीचे चला जाएगा|

🌪️३. हवा ज़हरीली हो जाएगी, धूल भरी आंधियां, प्रदूषण और स्मॉग कई गुना बढ़ेगा|

🐾 ४. जंगल और जीव–जंतु खत्म, तेंदुआ, सियार, नीलगाय जैसे जीव विलुप्त, आदिवासी, किसान और ग्रामीण जीवन तबाह|

🛑यह लड़ाई किसकी है?

यह लड़ाई:

सिर्फ आदिवासियों की नहीं, सिर्फ किसानों की नहीं, सिर्फ पर्यावरणविदों की नहीं|

👉 यह लड़ाई हर उस इंसान की है जो पानी पीता है, हवा में सांस लेता है और अपने बच्चों का भविष्य चाहता है।

✊ अब क्या करना होगा?

आवाज उठानी होगी, सोशल मीडिया पर सच दिखाना होगा, सरकार और प्रशासन पर दबाव बनाना होगा, अवैध खनन के खिलाफ एकजुट होना होगा, क्योंकि अगर आज चुप रहे, तो कल पछताने का समय भी नहीं बचेगा।

🔔 याद रखिए:

अगर अरावली टूटी — तो भारत टूटेगा।

✍️ Sujat Damor – Tribal Voice of Truth

जय जोहार 🌿✊

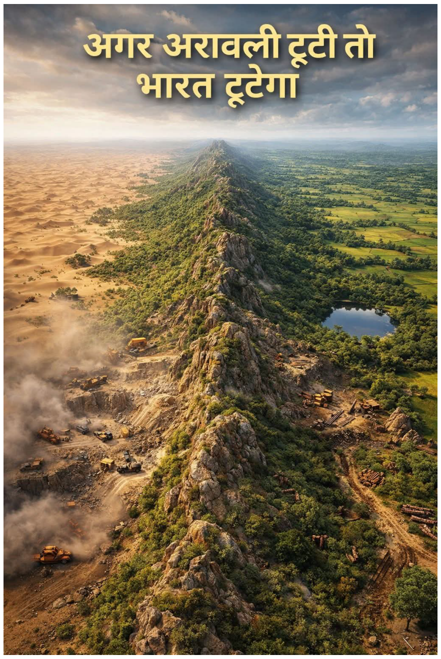

🪙"जब पैसा सिर्फ धातु नहीं था, यादें भी था..." 💭

ये वो सिक्के हैं जो हमारे दादा–परदादा के ज़माने में चलते थे — ३ पैसा, ५ पैसा, १० पैसा, १२ पैसा, २५ पैसा, ५० पैसा, ७५ पैसा...

हर सिक्का अपनी अलग पहचान रखता था, कहीं चौकोर, कहीं गोल, कहीं फूल जैसी आकृति में ढला हुआ। 🌸

Ramraj Kumawat

ये सिक्के सिर्फ खरीद–फरोख्त का जरिया नहीं थे, बल्कि भारत की नई आर्थिक पहचान के प्रतीक थे — जब देश ने १९५७ में “नया पैसा” सिस्टम अपनाया और रुपये को १०० भागों में बाँटा गया। 💰

इन पर उकेरे अक्षर “नया पैसा” हमें याद दिलाते हैं, कि कैसे भारत पुराने से नए दौर में कदम रख रहा था — जहाँ परंपरा और आधुनिकता दोनों साथ–साथ चल रहे थे।

आज ये सिक्के भले ही बाजार से गायब हों, लेकिन कलेक्टर्स के लिए ये खज़ाने हैं और हम सबके लिए — बीते वक्त की सुनहरी झलक। ✨

🌿 बात केवल अरावली की नहीं... यह मिट्टी, भाषा, बादल और हमारे अस्तित्व की लड़ाई है! 🌿

✍ Sujat Damor

अरावली सिर्फ पहाड़ों की एक कतार नहीं है। अरावली राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली और पूरे उत्तर भारत की सांस है। अगर अरावली बचेगी — तो बारिश बचेगी, खेती बचेगी, पानी बचेगा, जीवन बचेगा। अगर अरावली टूटी — तो रेगिस्तान बढ़ेगा, गर्मी बढ़ेगी, पानी खत्म होगा। आज यह सवाल बहुत गंभीर है —

❓ क्या हम अरावली को बचा रहे हैं या चुपचाप कटते हुए देख रहे हैं?

🏔️अरावली क्या है? (साफ और सरल भाषा में)

🔹 अरावली दुनिया की सबसे पुरानी पर्वतमालाओं में से एक है

🔹 उम्र: ३०० करोड़ साल से भी ज्यादा पुरानी

🔹 फैलाव: दिल्ली → हरियाणा → राजस्थान → गुजरात

🔹 लंबाई: लगभग ७०० किलोमीटर

🔹 सबसे ऊँची चोटी: गुरु शिखर (माउंट आबू)

➡ यह हिमालय से भी पुरानी है, लेकिन आज सबसे ज्यादा खतरे में है।

🌨️अरावली क्यों जरूरी है? (हर बिंदु पढ़िए)

✔ थार रेगिस्तान को फैलने से रोकती है ✔ मानसून के बादलों को रोककर बारिश करवाती है ✔ भू-जल (Ground Water) को भरती है ✔ धूल भरी आंधी और लू को रोकती है ✔ दिल्ली–NCR का तापमान संतुलित रखती है ✔ हजारों गांवों की खेती इसी पर निर्भर है

👉 अरावली नहीं होगी तो राजस्थान पूरा रेगिस्तान बन जाएगा।

⚠ "तिरछी काटी जा रही अरावली" का असली मतलब आज पहाड़ों को सीधे नहीं, कागजों और नियमों से तिरछा काटा जा रहा है।

🔴 नया बड़ा विवाद (२०२४–२०२५)

सरकार ने अरावली की नई परिभाषा लाने की कोशिश की: ➡ सिर्फ वही जमीन "अरावली" मानी जाएगी ➡ जिसकी ऊँचाई १०० मीटर से ज्यादा हो

❗ इसका मतलब: ❌ छोटे–छोटे पहाड़ अब "अरावली नहीं" कहलाएंगे

❌ उन पर खनन, कटाई, कंस्ट्रक्शन आसान हो जाएगा

❌ ८०–९०% अरावली कानूनी सुरक्षा से बाहर

👉 यही है तिरछी कटाई — दिखती नहीं, लेकिन बहुत खतरनाक।

⛏ खनन और जंगल कटाई की सच्चाई

📌 अरावली में:

पत्थर, ग्रेनाइट, मार्बल, खनिज इसी लालच में:

❌ अवैध खनन

❌ जंगल कटाई

❌ पहाड़ों को मैदान बनाया जा रहा है

➡ नतीजा: 🔥 तापमान बढ़ रहा है

💧 पानी सूख रहा है

🌪️धूल–आंधी बढ़ रही है

📢 २०२५ तक जनता का विरोध

✊ "Save Aravalli" आंदोलन

✊ युवाओं के मार्च

✊ पर्यावरण कार्यकर्ताओं की आवाज

✊ सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं

लेकिन सवाल वही: ❓ क्या हमारी आवाज़ पर्याप्त है?

"अरावली सिर्फ पहाड़ नहीं, यह मिट्टी, भाषा, बादल और संस्कृति है।"

👉 अगर अरावली टूटी:

भाषा बदलेगी, खेती बदलेगी, जीवन बदल जाएगा, यह केवल पर्यावरण नहीं, पहचान का सवाल है।

🧠सीधी बात (सार)

✔ अरावली = जीवन रेखा ✔ अरावली टूटी = भविष्य खतरे में ✔ चुप रहे = अपराध में भागीदार ✔ आवाज उठाई = बदलाव संभव

✊ मेरी अपील (Sujat Damor की ओर से)

🙏 हर युवा से 🙏 हर किसान से 🙏 हर आदिवासी भाई–बहन से 🙏 हर उस इंसान से जो पानी–जंगल–जमीन से प्यार करता है

➡ आज आवाज नहीं उठाई, तो कल पानी के लिए लड़ना पड़ेगा।

अरावली बचेगी — तो भारत बचेगा।

जय जोहार 🌿 जय जंगल

🌿▲ अरावली पर्वतमाला: भारत की सबसे पुरानी जीवनरेखा ▲🌿

– Sujat Damor

अरावली पर्वतमाला केवल पहाड़ों की एक श्रृंखला नहीं है, बल्कि यह भारत की सांस, जलवायु का संतुलन, खेती–बाड़ी का आधार और रेगिस्तान को रोकने वाली दीवार है।

अरावली दुनिया की सबसे पुरानी पर्वतमालाओं में से एक मानी जाती है, जिसकी उम्र लगभग ३०० करोड़ वर्ष बताई जाती है। यह पर्वतमाला गुजरात के पालनपुर से शुरू

होकर राजस्थान, हरियाणा होते हुए दिल्ली तक फैली हुई है।

🗺️अरावली कहां–कहां फैली है?

अरावली पर्वतमाला इन प्रमुख राज्यों और इलाकों से होकर गुजरती है:

📍 गुजरात – पालनपुर

📍 राजस्थान – उदयपुर, अजमेर, सिरोही, नाथद्वारा, सजनगढ़, माउंट आबू

📍 हरियाणा – गुरुग्राम, फरीदाबाद

📍 दिल्ली – साउथ दिल्ली, रिज एरिया

👉 अरावली का सबसे ऊँचा शिखर है

▲ गुरु शिखर (१७२२ मीटर) – माउंट आबू (राजस्थान)

🌾 अरावली और खेती–बाड़ी का रिश्ता

अरावली पर्वतमाला के आसपास की जमीन खेती के लिए बेहद उपजाऊ है।

यहां प्रमुख रूप से उगाई जाने वाली फसलें हैं:

🌾 गेहूं 🌽 बाजरा 🌿 सरसों 🌸 अफीम 🌱 कपास

👉 अगर अरावली नहीं होती, तो राजस्थान का बड़ा हिस्सा रेगिस्तान बन चुका होता और खेती नामुमकिन हो जाती।

🌳 जंगल, हरियाली और जैव विविधता अरावली क्षेत्र में पाए जाते हैं:

🌳 घने जंगल 🦌 वन्य जीव 🐆 तेंदुआ, सियार, नीलगाय 🌿 औषधीय पौधे

ये जंगल भूजल को बचाते हैं, बारिश को रोकते हैं और तापमान संतुलित रखते हैं।

🏜️रेगिस्तान को रोकने वाली दीवार

अरावली पर्वतमाला ही है जो

❌ थार रेगिस्तान को दिल्ली और हरियाणा तक आने से रोकती है

अगर अरावली कमजोर होती है, तो:

⚠ दिल्ली में हवा और ज़हरीली होगी

⚠ हरियाणा की खेती खत्म हो जाएगी

⚠ राजस्थान पूरी तरह रेगिस्तान बन जाएगा

🚨 अरावली पर सबसे बड़ा खतरा

आज अरावली पर सबसे बड़ा खतरा है:

❌ अवैध खनन

❌ पहाड़ों की कटाई

❌ जंगलों की अंधाधुंध सफाई

❌ रियल एस्टेट और माफिया

सरकारी नियम होने के बावजूद, अरावली को धीरे-धीरे खत्म किया जा रहा है।

✊ अब सवाल – क्या हम चुप रहेंगे?

अगर आज हम नहीं जागे, तो आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी।

👉 अरावली बची =

✔ पानी बचेगा ✔ खेती बचेगी ✔ जंगल बचेंगे ✔ इंसान बचेगा

📢 मेरी आप सभी से अपील

मेरी तरह आप भी आवाज उठाइए। एक पोस्ट, एक शेयर, एक आवाज भी बदलाव ला सकती है। अरावली बचेगी तभी भारत बचेगा।

✍ लेखक:

Sujat Damor

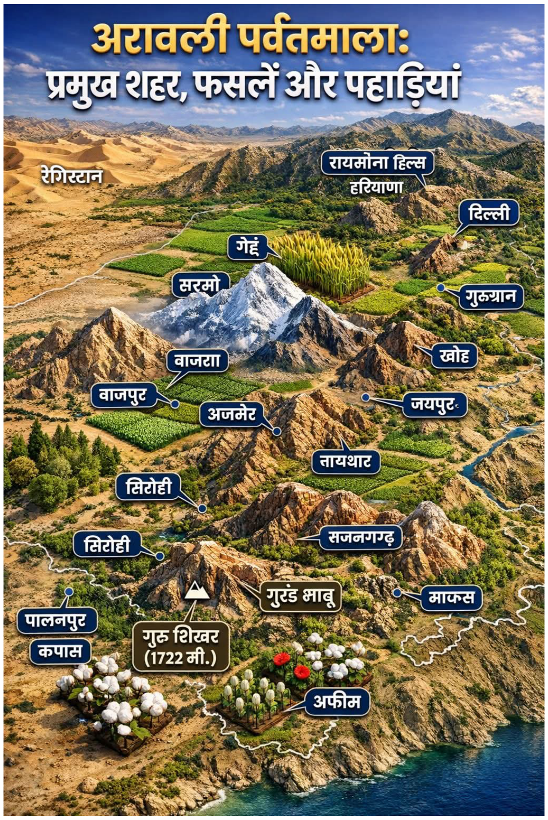

#बौद्ध_धर्म में मुख्य रूप से चार सबसे पवित्र तीर्थ स्थल माने जाते हैं, जो भगवान बुद्ध के जीवन की चार महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़े हैं। इसके अलावा, भारत और विश्व में कई अन्य स्थल भी हैं जिनका ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व है।

प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल:–

१. #चार_मुख्य तीर्थ स्थल (सबसे पवित्र) ये वे चार स्थान हैं जहाँ हर बौद्ध अनुयायी अपने जीवन में कम से कम एक बार जाने की इच्छा रखता है:

• #लुम्बिनी (नेपाल): यह भगवान बुद्ध का जन्म स्थान है। यहाँ सम्राट अशोक द्वारा स्थापित 'अशोक स्तंभ' और माया देवी मंदिर मुख्य आकर्षण हैं।

• #बोधगया (बिहार, भारत): यहाँ भगवान बुद्ध को पीपल के वृक्ष (बोधि वृक्ष) के नीचे ज्ञान (Enlightenment) प्राप्त हुआ था। यहाँ का 'महाबोधि मंदिर' यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है।

• #सारनाथ (उत्तर प्रदेश, भारत): ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश (धम्मचक्रप्पवत्तन) यहीं दिया था। यहाँ धमेख स्तूप और चौखंडी स्तूप प्रसिद्ध हैं।

• #कुशीनगर (उत्तर प्रदेश, भारत): यहाँ भगवान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण (शरीर त्याग) प्राप्त किया था। यहाँ भगवान बुद्ध की लेटी हुई मुद्रा में एक विशाल प्रतिमा है।

२. अन्य महत्वपूर्ण स्थल (भारत में)

इनके अलावा कुछ अन्य स्थान भी बुद्ध के जीवन और बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार से गहराई से जुड़े हैं:

• #श्रावस्ती (उत्तर प्रदेश): यहाँ बुद्ध ने अपने जीवन के सबसे अधिक वर्षावास (monsoon retreats) बिताए थे और कई चमत्कार दिखाए थे।

• #राजगीर (बिहार): यह बुद्ध का पसंदीदा निवास स्थान था। यहाँ 'गृधकूट पर्वत' और विश्व शांति स्तूप स्थित हैं।

• #नालंदा (बिहार): यह प्राचीन विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध विश्वविद्यालय और शिक्षा का केंद्र था।

• #वैशाली (बिहार): यहाँ बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश दिया था। यह स्थान प्रथम महिला भिक्षुणी (प्रजापति गौतमी) के संघ में प्रवेश के लिए भी जाना जाता है।

• #सांची (मध्य प्रदेश): यहाँ महान मौर्य सम्राट अशोक द्वारा निर्मित विशाल स्तूप हैं, जो बौद्ध वास्तुकला का अद्भुत नमूना हैं।

• #दीक्षाभूमि (नागपुर, महाराष्ट्र): यहाँ डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपनाया था। इसे आधुनिक बौद्ध तीर्थ माना जाता है।

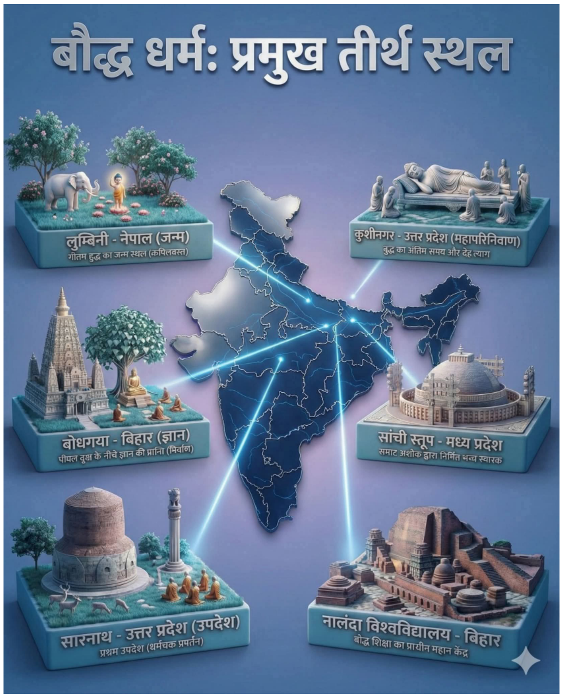

खालील पेंटिंग अजंठा बौद्ध लेणी मधील आहे.

तथागत भगवान गौतम बुद्ध आपल्या मुलाला वारसा म्हणून भिक्षापात्र देत आहे. ह्या पेंटिंग मध्ये कोणते कलर वापरले जे आजही टिकून आहेत?

अजंठा लेण्यांमधील भित्तीचित्रांमध्ये नैसर्गिक खनिज (mineral) व मातीजन्य रंग वापरले गेले होते. म्हणूनच १५००–२००० वर्षांनंतरही काही रंग आज टिकून आहेत.

अजंठा चित्रांत वापरलेले आणि आजही दिसणारे रंग 🎨

१. लाल रंग (Red)

लाल गेरू/हेमॅटाइट (Red Ochre–Iron Oxide)

हा रंग सर्वात जास्त टिकलेला दिसतो

२. पिवळा रंग (Yellow)

पिवळा गेरू (Yellow Ochre–Goethite)

मातीपासून मिळणारा नैसर्गिक रंग.

३. पांढरा रंग (White)

चुना (Lime) किंवा काओलिन माती

पार्श्वभूमी व वस्त्रांसाठी वापर.

४. काळा रंग (Black)

काजळी/Lamp Black (Carbon)

दिव्यांची काजळी किंवा जळालेल्या पदार्थांपासून.

५. हिरवा रंग (Green)

Terre Verte/Celadonite

तांबेयुक्त खनिजापासून तयार.

६. निळा रंग (Blue)

फारच कमी प्रमाणात पण महत्त्वाचा

लॅपिस लाझुली (Lapiz Lazuli) – अफगाणिस्तानातून आणलेला महागडा खनिज.

काही ठिकाणी इंडिगो (नीळ) सुद्धा वापरले आहे.

हे रंग इतके टिकून का राहिले? 🤔

सर्व रंग नैसर्गिक खनिजांपासून बनवलेले

रंग मिसळण्यासाठी डिंक, प्राणिज गोंद किंवा वनस्पतीजन्य बाइंडर भिंतींवर आधी चुन्याचा थर, त्यावर रंग लेणींचे नैसर्गिक वातावरण (सूर्यप्रकाश कमी, ओलावा नियंत्रित)
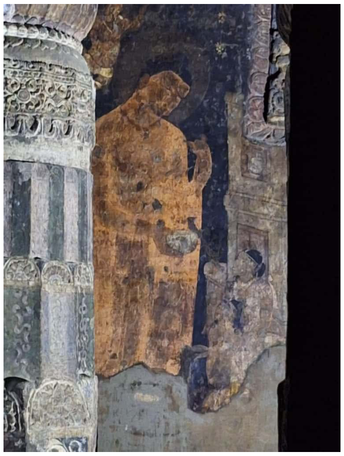
👉 म्हणूनच अजंठाची चित्रे ही फक्त कला नाही, तर प्राचीन रंगतंत्रज्ञानाची जिवंत साक्ष आहेत.